टिड्डियों के हमले के लिए चेतावनी

कोरोनो वायरस महामारी के बीच में, भारत को देश के पश्चिमी भागों में प्रवेश करने वाली टिड्डियों के खिलाफ एक और लड़ाई लड़नी होगी। राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, पंजाब और महाराष्ट्र में टिड्डी दल पहले ही अपना रास्ता बना चुके हैं । भारत में 1993 में हुए टिड्डियों के हमले से वर्तमान टिड्डी आक्रमण अत्याधिक नुकसानदायक है। संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन द्वारा टिड्डी पूर्वानुमान के अनुसार, वर्तमान टिड्डी प्रकोप इथियोपिया और सोमालिया में 25 वर्षों, भारत में 27 वर्षों, केन्या में 70 वर्षों में सबसे अत्याधिक देखा गया है।

अफ्रीकी क्षेत्र में भी अतिरिक्त चक्रवातों के कारण टिड्डियों के हमले की संभावना है। दो चक्रवातों मई और अक्टूबर)2018) के कारण टिड्डी प्रकोप उत्पन्न हुआ जिसने जून 2018 से मार्च 2019 तक अरब -प्रायद्वीप में टिड्डी प्रजनन को तीन पीढ़ियों तक बढ़ने के परिस्थितयाँ प्रदान की, जो टिड्डियों की संख्या में 8,000 गुना वृद्धि का कारण बनी । टिड्डियां जो ईरान और बलूचिस्तान में व्यस्क हुई, वर्तमान में भारत में फसलों पर हमला कर रही हैं। अभी भी अगले महीने ही अफ्रीका में प्रजनन करने वाले टिड्डियों के झुंड की भारत और पाकिस्तान में पहुंचने की संभावना है और इसके साथ अन्य झुंड भी प्रवेश कर सकते हैं|

टिड्डी हमले के कारण राजस्थान के 20 जिलों में लगभग 90,000 हेक्टेयर भूमि प्रभावित हुई है। अधिकारियों द्वारा इनसे निपटने के लिए आयोजित कार्यवाही के बाद टिड्डी के झुंड श्री गंगानगर नागौर, जयपुर, दौसा, करौली और सवाई माधोपुर से गुजरात अमरेली), सुरेंद्रनगर और भावनगर जिले) उत्तर प्रदेश (झांसी, आगरा और दिल्ली के पास गौतमबुद्ध नगर), पंजाब फाजिल्का) और मुक्तसर जिले(, मध्यप्रदेश (नीमच, उज्जैन, देवास, मंदसौर, श्योपुर, मोरेना, टीकमगढ़,पन्ना, छतरपुर, सीहोर, रायसेन, होशंगाबाद और हरदा जिले) और महाराष्ट्र (अमरावती, वर्धा और नागपुर जिला (के अन्य क्षेत्रों की ओर स्थानांतरित हो गए हैं। इसके तेलंगाना, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश के कुछ हिस्सों की ओर भी बढ़ने की उम्मीद है ।

रेगिस्तानी टिड्डी के हमले ने राजस्थान, गुजरात, उत्तर प्रदेश, पंजाब, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र राज्यों में 50,000 हेक्टेयर क्षेत्रों में फैली फसलों को नष्ट कर दिया है। टिड्डियों ने हरे भरे खेतों से लदी बाजरा, चारा, मक्का, हरे चने, काले चने, अरंडी, गेहूं, कपास और सब्जी फसलों को नष्ट कर दिया है।

खेती की गई फसलों पर टिड्डी नियंत्रण

* किसी भी चिपचिपे एजेंट जैसे कि साबुन के घोल के साथ नीम आधारित कीटनाशक (एजेडिरैकटिन 1500 पीपीएम(का फसलों पर 5 मिलीलीटर / लीटर की दर से छिड़काव एक रोगनिरोधी उपाय के रूप में करें।
* कीटनाशकों जैसे मैलाथियोन 50 ईसी 1.5 मिली लीटर / या क्लोरपायरीफॉस 20% ईसी का 2.5 मिली लीटर / के दर से छिड़काव शाम के समय करें।
* मैलाथियान 5% डीपी या फेनवलरेट 0.4% डीपी पाउडर 25 किग्रा हेक्टेयर के / हिसाब से फसलों की डस्टिंग करें
* एंटोमोपैथोजन मेटाराईजियम एनिसोप्ले का (स्ट्रेन आईएमआई 330189 (2.5×10^{12} कोनिडिया/हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें
* यांत्रिक नियंत्रण विधियाँ में जैसे फुदके नियंत्रण के लिए गड्डा खोदकर मैलाथियान 5% डीपी झाड़ना ताकि फुदके उसमें गिरें या फुदकों को शाखाओं से पीटना
* चारा- मैलाथियान कीटनाशक धूल 5% डीपी या फेनवलरेट 0.4% डीपी वाहक के साथ जैसे मक्का भोजन या गेहूं की भूसी के साथ मिलाकर (मार्चिंग बैंड के लिए 5-15 किग्रा हेक्टेयर /, बसे हुए और वयस्कों के लिए 50 किग्रा (हेक्टेयर से अधिक / टिड्डियों के रास्ते में या बीच में छिडकें। किसानों यह सुनिश्चित कर लें कि यह चारा पशु न खाएं।

जंगली रेगिस्तानी क्षे /त्रों में टिड्डी झुंड प्रबंधन

* शाम या रात के समय सरकारी अधिकारियों की देखरेख में यूएलवी (ULV) कीटनाशक यानी मैलाथियान 96% का हवाई छिड़काव करें जब झुंड पौधों पर स्थाई हो जाए ।
* यांत्रिक नियंत्रण विधियाँ में जैसे फुदके नियंत्रण के लिए गड्डा खोदकर मैलाथियान 5% डीपी झाड़ना ताकि फुदके उसमें गिरें या फुदकों को शाखाओं से पीटना
* चारा- मैलाथियान कीटनाशक धूल 5% डीपी या फेनवलरेट 0.4% डीपी वाहक के साथ जैसे मक्का भोजन या गेहूं की भूसी के साथ मिलाकर (मार्चिंग बैंड के लिए 5-15 किग्रा हेक्टेयर /, बसे हुए और वयस्कों के लिए 50 किग्रा (हेक्टेयर से अधिक / टिड्डियों के रास्ते में या बीच में छिडकें। किसानों यह सुनिश्चित कर लें कि यह चारा पशु न खाएं।